International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 21-03-2026, Accepted: 21-04-2026, Published: 06-05-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 176-179

भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भूमिका: उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

दीपक नाथ[1], डॉ. हेमा[2]

[1] शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, एस एस जे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय स्याल्दे, सोबन सिंहं जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा उत्तराखण्ड, भारत

[2] शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर एवम् विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, एस एस जे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय स्याल्दे, सोबन सिंहं जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

भारत की राजनीति में क्षेत्रीय दल स्थानीय हितों, सांस्कृतिक पहचान और भाषाई मुद्दों को प्रमुखता देकर राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये दल गठबन्धन सरकारें बनाकर (जैसे वर्तमान एनडीए में टीडीपी, जदयू) केन्द्र राज्य सम्बन्धों को सन्तुलित करते हैं, क्षेत्रीय स्वायत्तता को बढ़ावा देते हैं और राष्ट्रीय दलों के वर्चस्व को चुनौती देते हैं। भारत की राजनीति में क्षेत्रीय दलों (Regional Parties) का महत्व 1960 के दशक के बाद से लगातार बढ़ा है। ये दल केन्द्र सरकार की तानाशाही को रोकते हैं और राज्यों को अधिक स्वायत्तता (Autonomy) देने की माँग करते हैं। भाषाई या जातीय अल्पसंख्यकों के मुद्दों को उठाकर, ये दल हाशिए पर पड़े समुदायों को आवाज देते हैं। उत्तराखण्ड राज्य का गठन ही एक क्षेत्रीय आन्दोलन (उत्तराखण्ड क्रांति दल – UKD) की प्रमुख भूमिका का परिणाम था, जो स्थानीय पहचान और विकास की माँग पर आधारित था। उत्तराखण्ड क्रान्ति दल (UKD) ने पर्वतीय क्षेत्रों की बिशिष्ट समस्याओं जैसे– पलायन, भू–अधिग्रहण, और पहाड़ी संस्कृति के संरक्षण को प्रमुखता से उठाया हैं। क्षेत्रीय दल भारतीय राजनीति में विविधता और संघीय भावना के प्रतीक हैं। उत्तराखण्ड में जहां भौगोलिक परिस्थितियाँ (पहाड़) और मुद्दे (पलायन, विकास) विशिष्ट हैं, क्षेत्रीय दल स्थानीय जरूरतों को प्रमुखता देने और विकास की मुख्यधारा में पहाड़ी संस्कृति को बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं।

मूल शब्द: उत्तराखण्ड कान्ति दल (U.K.D.), राजनीति, पलायन, विकास, भाषा, संस्कृति, राष्ट्रीय, अल्पसंख्यक, सडक, शिक्षा, स्वास्थ्य

भारत जैसे विशाल, विविध और बहुभाषी देश में, राष्ट्रीय दलों के साथ–साथ क्षेत्रीय दलों (Regrinal Partries) का उदय भारतीय लोकतन्त्र की परिपक्वता को दर्शाती है। क्षेत्रीय दल वे राजनीतिक दल हैं जिनका प्रभाव किसी एक राज्य या विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित होता है और जो स्थानीय मुद्दों, भाषा, संस्कृति या जातिगत पहचान के आधार पर राजनीति करते हैं। 1960 के दशक (विशेषकर 1989 के बाद) से ही इन दलों ने भारतीय राजनीति के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है, जिससे देश एक – दलीय वर्चस्व से बहुदलीय गठबन्धन (coalitions Politics) की ओर बढ़ा है। भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का महत्व एवम् भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो देश के जीवंत लोकतन्त्र और विविधता को दर्शाता है। उत्तराखण्ड में क्षेत्रीय दलों, विशेषकर उत्तराखण्ड क्रान्ति दल (UKD) की भूमिका राज्य आन्दोलनकारी विरासत, स्थानीय अस्मिता, और जल–जंगल–जमीन जैसे मुद्दों को उठाने में प्रमुख रही हैं। हालांकि 2000 में गठन के बाद से राज्य में भाजपा–कांग्रेस का द्विध्रुवीय वर्चस्व रहा है। जिससे क्षेत्रीय दलों को 'दबाव समूह' या सहायक भूमिका तक सीमित रहना पड़ा है, फिर भी वे अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। उत्तराखण्ड में क्षेत्रीय दल सत्ता के मुख्य केन्द्र न होकर, राज्य की सांस्कृतिक और भौगोलिक विशिष्टताओ के संरक्षक और स्थानीय मुद्दों के मुखर समर्थक के रूप में कार्य करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

- **क्षेत्रीय आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति:** यह समझना की कैसे ये दल स्थानीय मुद्दों, जैसे भाषा, संस्कृति और क्षेत्रवाद के आधार पर जनता की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **संघीय ढांचे का सुदृढीकरण:** केन्द्र की Dominance (प्रभुत्व) को कम कर सहकारी संघवाद (Cooperative Federalism) को बढ़ावा देने में इनकी भूमिका का विश्लेषण करना।
- **गठबन्धन की राजनीति का विश्लेषण करना:** केन्द्र में स्थिर सरकारें बनाने और गठबन्धन राजनीति (Coalition Politics) में इनकी 'किंगमेकर' भूमिका का अध्ययन करना।"
- **क्षेत्रीय असन्तुलन और विकास:** राज्यों की स्वायत्तता की माँग, आर्थिक असमानता के मुद्दों और राज्य–विशिष्ट विकास प्राथमिकताओं को समझना।
- **राजनीतिक विविधता और लोकतन्त्र:** बहुदलीय व्यवस्था में क्षेत्रीय दलों द्वारा राष्ट्रीय दलों के वर्चस्व को चुनौती देने और लोकतन्त्र को अधिक प्रतिनिधिक बनाने की जांच करना।
- **स्थानीय नेतृत्व का उदय:** राष्ट्रीय राजनीति के बजाय राज्य–स्तरीय नेतृत्व को बढावा देने में क्षेत्रीय दलों की भूमिका का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- गठबन्धन राजनीति में किंगमेकर।
- क्षेत्रीय आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व।
- संघीय ढांचे (Federal Structure)को मजबूती।
- राजनीतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण।
- वंचित समूहों की भागीदारी।

साहित्य समीक्षार: भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका, विशेषकर उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में, साहित्य समीक्षा (Literature Reveiw) के अनुसार एक जटिल और विरोधाभासी विषय है। जहाँ एक ओर क्षेत्रीय दलों ने राज्य आन्दोलन में निर्णायक भूमिका निभाई, वहीं राज्य गठन के बाद वे चुनावी राजनीति में प्रभावी भूमिका निभाने में विफल रहे हैं।

उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में क्षेत्रीय दलों की भूमिका पर साहित्य की समीक्षा के मुख्य बिन्दु:

1. राज्य आन्दोलन में प्रमुख भूमिका (पूर्व–गठन दौर)

- **उत्तराखण्ड कान्ति दल (UKD):** साहित्य इस बात पर सहमत है कि जुलाई 1979 में गठित UKD, पृथ्व राज्य की गाँग का वैचारिक और जन–आन्दोलनकारी वाहक था इन्द्रमणी बड़ोनी और अन्य नेताओं ने राज्य की प्रासंगिकता को श्जन–जन तक पहुँचाया।

- **गैर– राजनीतिक मंच से राजनीतिक मांग:** आन्दोलन के शुरुआती दौर में कई संगठन शामिल थे, लेकिन UKD ने इसे एक स्पष्ट राजनीतिक मांग में बदला।

- **जनांदोलन:** क्षेत्रीय दलों ने भाषाई, सांस्कृतिक और भौगोलिक विशिष्टता (पहाडी पहचान) के आधार पर आन्दोलन को तेज किया।

2. राज्य गठन के बाद हाशिए पर (पश्चात–गठन दौर)

- **'द्वि– ध्रुवीय राजनीति (Bipolar Politics):** साहित्य यह दर्शाता है कि राज्य गठनश (2000) के बाद उत्तराखण्ड की राजनीति तेजी से भाजपा–कांग्रेस की द्विध्रुवीय प्रणाली बदल गई।

- **UKD का पतन:** राज्य प्राप्त करने के बाद UKD अपनी पहचान और जनाधार बनाए रखने में विफल रही, इसका मुख्य कारण आंतरिक गुटबाजी और वैचारिक स्पष्टता की कमी माना जाता है।

- **वोट कटवा पार्टी:** चुनावी साहित्य में UKD और अन्य क्षेत्रीय दलों को अक्सर 'वोट कटवा' पार्टी" के रूप में देखा गया हैं, जो मुख्य राष्ट्रीय दलों को नुकसान पहुँचाते हैं लेकिन खुद सत्ता नहीं पाते।

3. क्षेत्रीय दलों की विफलता के कारण (साहित्यिक विश्लेषण)

- **क्षेत्रीय अस्मिता का न भुना पाना:** क्षेत्रीय दल स्थानीय मुद्दो (जैसे– पलायन, शिक्षा, स्वास्थ्य) को उठाने में तो सफल रहे, लेकिन वे मतदाताओं को यह विश्वास नहीं दिला पाए कि वे राष्ट्रीय दलों से बेहतर सरकार दे सकते हैं।"

- **संगठनात्मक कमजोरी:** UKD और अन्य छोटी पार्टियों (जैसे– उत्तराखण्ड परिवर्तन पार्टी) में मजबूत सांगठनिक ढांचे और धन की कमी एक बड़ा कारण हैं।

- **राष्ट्रीय दलों का दबदबा:** केन्द्र में सत्तासीन दलोंश (भाजपा, कांग्रेस) की नीतियां और नैरेटिव स्थानीय अस्मिता पर भारी पड़ गए।

4. **साहित्य का निष्कर्ष:** उत्तराखण्ड साहित्य में क्षेत्रीय दलों की भूमिका को एक ऐसे नायक के रूप में देखा जाता है जिसने श्राज्यश ष्तोश जीता, लेकिन श्सरकार नहीं। वे एक जन–आन्दोलनकारी शक्ति के रूप में तो सफल रहे, लेकिन एक निर्वाचित राजनीतिक शक्ति के रूप में असफल रहे ।

शोध विधि (Research Methodology)

- **ऐतिहासिक विधि (Historical Method):** क्षेत्रीय दलो के उदय के कारणों – का अध्ययन (जैसे–डीएमके, अकाली दल, जेडीयू, सपा, टीएमसी) और समय के साथ उनकी भूमिका में बदलाव का विश्लेषण ।

- **तुलनात्मक विधि (comparative method):** विभिन्न राज्यों के क्षेत्रीय दलों (उत्तर बनाम दक्षिण) की विचारधारा, कार्यशैली और उनके प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण ।

- **विश्लेषणात्मक विधि (Analytical Method):** चुनावी डेटा मत प्रतिशत, गठबन्धन सरकार के फैसलों और नीतिगत दस्तावेजों के माध्यम से इन दलों की प्रभावशीलता का अध्ययन।

- **गुणात्मक और मात्रात्मक डेटाश्रोत:** शोध के लिए चुनाव आयोग की रिपोर्ट, समाचार लेख, अकादमिक शोध पत्र और चुनावी घोषणापत्रों का उपयोग किया जाता है।

क्षेत्रीय दलों का उदय एवम् विकास: भारत में क्षेत्रीय दलों का उदय (1960– 70 के दशक) मुख्य रूप से कांग्रेस के राष्ट्रीय वर्चस्व के जवाब में, भाषाई, सांस्कृतिक और क्षेत्रीय पहचान को मजबूत करने के लिए हुआ। ये दल स्थानीय समस्याओं विकास असमानता, और जातीय, क्षेत्रीय हितों पर केन्द्रित होते हैं। 1980–90 के बाद गठबन्धन सरकारों में इनकी भूमिका अहम हो गई। क्षेत्रीय दलों का उदय जातीय और सांस्कृतिक विविधता तथा जाति एवम् धार्मिक समूहों के प्रभाव के कारण हुआ है। क्षेत्रीय दलों के उदय से लोगों में राजनीतिक भागीदारी और राजनीतिक चेतना में भी वृद्धि हुई हैं। भारत में बहुदलीय प्रणाली है। अनुमान है कि स्वतन्त्रता के बाद से भारत में 2100 से अधिक पंजीकृत राजनीतिक दल अस्तित्व में आए हैं। वर्तमान में छः राष्ट्रीय राजनीतिव दल और 50 क्षेत्रीय राजनीतिक दल केन्द्र और राज्य दोनों की राजनीति में सक्रिय है। पहले कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व के कारण क्षेत्रीय दल केन्द्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में असमर्थ थे। लेकिन हाल ही के समय में, क्षेत्रीय दलों के उदय ने भारत कि 'एकदलीय प्रणाली' को सबसे बड़ी चुनौती दी है। 1967 से, क्षेत्रीय दल अधिक राजनीतिक प्रभाव के साथ उभर रहे हैं। और अधिकांश राज्य की राजनीति पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर रहे हैं। वे एक शक्तिशाली ताकत के रूप में उभरे हैं और केन्द्र में सरकारों के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वर्तमान में केन्द्र में कोई भी एकल पार्टी सरकार बनाने में सक्षम नहीं हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि एकदलीय शासन का युग समाप्त हो गया है और बहुदलीय गठबन्धनों का नया दौर शुरू हो गया हैं। क्षेत्रीय पार्टियों ने भारत केन्द्र–राज्य सम्बन्धों की प्रकृति पर गहरा प्रभाव डाला हैं। वे अब अपने– अपने क्षेत्रीय हितों की रक्षा के साथ–साथ भारतीय एकता और अखण्डता के मुद्दे को भी मजबूती से उठा रही हैं। उन्होंने दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों का ध्यान विभिन्न राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की ओर आकर्षित किया है. और राजनीतिक जागरूकता में योगदान दिया है।

भारत में प्रमुख क्षेत्रीय राजनीतिक दल

प्रमुख क्षेत्रीय राजनीतिक दल	गठन का वर्ष
डी. एम. के. (DMK)	1949
एआईएडीएमके (AIADMK)	1972
जनता दल	1988
राष्ट्रीय जनता दल	1997
तेलगु देशम पार्टी	1982
शिवसेना (मूल पार्टी)	1966
जनता दल (यूनाइटेड)	2003

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी	1999
तृणमूल कांग्रेस	1998
समाजवादी पार्टी	1992
लोक जनशक्ति पार्टी (मूल पार्टी)	2000
तेलगांना राष्ट्र समिति	2001
YSR कांग्रेस	2011
बीजू जनता दल	1997
असम गण परिषद	1988
झारखण्ड मुक्ति मोर्चा	1972
शिरोमणि अकाली दल	1920
उत्तराखण्ड क्रान्ति दल (UKD)	1979

स्त्रोतः एसोशिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म (ADR)

गठबन्धन सरकारें और क्षेत्रीय दलः भारतीय राजनीति में गठबन्धन सरकार और क्षेत्रीय दल (Regional Parties) एक–दूसरे के पूरक बन गए हैं, जो बहुदलीय लोकतन्त्र में स्थिरता और विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब चुनाव में किसी एक दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिलता, तब विभिन्न दल मिलकर साझा न्यूनतम कार्यक्रम के आधार पर सरकार बनाते हैं। क्षेत्रीय दल जो विशिष्ट भाषाई, सांस्कृतिक या क्षेत्रीय मुद्दो पर आधारित होते हैं,

केन्द्र की राजनीति में किंगमेकर की भूमिका निभाते हैं। 1989 से 2014 तक, केन्द्र में गठबन्धन सरकारें हावी रहीं। गठबन्धन सरकारों में सभी दलो की सहमति (सामूहिक उत्तरदायित्व) से फैसले लिए जाते हैं। मुख्य रूप से एनडीए (NDA–भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में) और यूपीए (UPA–कांग्रेस के नेतृत्व में) प्रमुख गठबन्धन रहे है। केन्द्र सरकार के गठन में क्षेत्रीय दलों के सहयोग की आवश्यकता होती हैं। जिससे उनका प्रभाव बढ़ जाता है। क्षेत्रीय दल केन्द्र–राज्य सम्बन्धों में स्थानीय मुद्दों को महत्व देकर भारतीय संघवाद को मजबूत करते हैं। गठबन्धन सरकार में क्षेत्रीय दलो के दबाव के कारण राष्ट्रीय नीतियों में क्षेत्रीय हितों का ध्यान रखा जाता हैं। गठबन्धन सरकार में निर्णय लेने में देरी हो सकती है, लेकिन यह अधिक समावेशी शासन सुनिश्चित करती है।

उत्तराखण्ड की राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका

उत्तराखण्ड की राजनीति में क्षेत्रीय दलों, विशेषकर उत्तराखण्ड क्रान्ति दल (UKD) की भूमिका राज्य निर्माण में निर्णायक रही हैं, लेकिन 2000 में स्थापना के बाद से ही राज्य की मुख्यधारा की राजनीति में भाजपा और कांग्रेस के द्विदलीय प्रभुत्व के कारण क्षेत्रीय दल मुख्य रूप से हाशिए पर रहे हैं। हांलाकि, ये दल मूल निवासी, भूकानून और पलायन जैसे स्थानीय मुद्दों को उठाकर चुनावी विमर्श को प्रभावित करते हैं। 25 जुलाई 1972 को गठित UKD ने उत्तराखण्ड अलग राज्य के आन्दोलन का नेतृत्व किया और राज्य गठन (9 नवम्बर 2000) में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उत्तराखण्ड प्रति दल (UKD) उत्तराखण्ड की अस्मिता, मूल निवास, सशक्त भू– कानून, गैरसैंण को स्थायी राजधानी, जल–जंगल जमीन और पलायन जैसे मुद्दों पर केन्द्रित रहते हैं। आन्दोलन के बाद, क्षेत्रीय दल (विशेषकर UKD) अपनी पकड़ खो बैठे हैं। 2002 में 4 सीटों के बाद, 2012 में 1, और 2017 व 2022 के विधानसभा चुनावों में इनके प्रदर्शन में निरन्तर गिरावट आई है। उक्रांद के अलावा, आप (AAP) जैसे नए दलों ने भी पैर जमाने की कोशिश की है, लेकिन पारम्परिक क्षेत्रीय मुद्दों (जैसे– मूल निवास) पर जोर न देने के कारण उन्हें आपेक्षित सफलता नहीं मिली है।

क्षेत्रीय दलों का भारतीय संघात्मक व्यवस्था पर प्रभाव

भारत में क्षेत्रीय दलों ने संघीय व्यवस्था को 'एकदलीय प्रभुत्व' से बहुदलीय गठबन्धन में बदलकर अधिक लोकतान्त्रिक और विकेन्द्रीकृत बना दिया हैं। ये दल क्षेत्रीय आंकाक्षाओं, भाषाई अस्मिता और स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रीय पटल पर रखकर राज्यों की स्वायत्तता (Autonomy) को मजबूत करते हैं और केन्द्र सरकार को निरंकुश होने से रोकते हैं। क्षेत्रीय दलो ने यह सुनिश्चित किया है कि राज्य अपने स्थानीय मुद्दों के आधार पर स्वतन्त्र रूप से शासन करें, जिससे केन्द्र राज्य सम्बन्धों में सहकारी संघवाद [Cooperative Federalism] को बढ़ावा मिला है। 1989 के बाद केन्द्र में गठबन्धन सरकारों के दौर में क्षेत्रीय दल 'किंगमेकर' बने हैं जिससे राष्ट्रीय नीति निर्माण में राज्यों की भागीदारी बढ़ी हैं। क्षेत्रीय दल भाषाई पहचान, सांस्कृतिक गर्व, और विकास सम्बन्धी असन्तुलन जैसे मुद्दों को केन्द्र के सामने मजबूती से रखते हैं। ये दल स्थानीय समुदायों, पिछड़ी जातियों और अल्पसंख्यक समूहों को मुखर प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं, जिससे लोकतन्त्र का आधार व्यापक हुआ हैं। यह दल संघवाद को मजबूती, क्षेत्रीय विकास पर जोर, और तानाशाही पर अकुंश लगाते हैं। वर्तमान में क्षेत्रीय दल अपनी राज्य विधानसभाओं और संसद में क्षेत्रीय हितों के मुद्दों पर चर्चा करके संघीय ढाँचे को सन्तुलन प्रदान करते हैं। भले ही कुछ समय से राष्ट्रीय स्तर पर उनका दबदबा थोडा कम हुआ हो।

2024 लोकसभा–चुनावी परिदृश्य में क्षेत्रीय दलों का उभार

लोकसभा चुनाव 2024 में क्षेत्रीय दलों ने निर्णायक भूमिका निभाते हुए गठबन्धन की राजनीति (coalition Parties) की वापसी कराई, जिससे एनडीए (NDA) सरकार टीडीपी और जेडीयू जैसे दलों पर निर्भर हो गई। सपा, टीएमसी, डीएमके जैसी पार्टियों ने अपने राज्यों में बेहतरीन प्रदर्शन कर राष्ट्रीय दलों के दबदबे को चुनौती दी और 2014–2019 के एक दलीय बर्चस्व को समाप्त कर दिया। 2024 के नतीजों में भाजपा को स्पष्ट बहुमत न मिलनें के बाद, टीडीपी (चन्द्रबाबू नायडू) और जेडीयू (नीतीश कुमार) किंग मेकर बनकर उभरे, जो केन्द्र में सरकार के स्थायित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं। क्षेत्रीय दलों ने 2019 के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन किया, उनकी सीटें 41 से बढ़कर 70 तक पहुँच गई और वोट शेयर बढकर लगभग 45 प्रतिशत हो गया समाजवादी पार्टी (UP) और राजद (बिहार) ने साधा भाषण को कड़ी टक्कर दी, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में सपा ने 43ः से अधिक वोट हासिल कर भाजपा के विजय रथ को रोका। डीएमके (तमिलनाडु), तृणमूल कांग्रेस (पश्चिम बंगाल), टीडीपी (आन्ध्र प्रदेश), जेडीयू (बिहार), सपा (यूपी), शिवसेना (महाराष्ट्र) ने प्रमुख भूमिका निभाई। ये दल राष्ट्रीय राजनीति में संघीय ढांचे को मजबूत करते हैं और केन्द्र सरकार को स्थानीय आकाशाओं के प्रति जवाबदेह बनाते हैं। हालांकि, कुछ क्षेत्रीय दल जो पहले किंगमेकर हुआ करते थे, 2024 में एक भी सीट नहीं जीत पाए, जो उनके घटते प्रभाव को भी दर्शाता है।

एक राष्ट्र एक चुनाव प्रभावः एक राष्ट्र, एक चुनाव का विचार पूरे देश में चुनावों की आवृत्ति को कम करने के लिए सभी राज्यों में लोकसभा और राज्य विधानसभा चुनावों को एक ही समय पर करना है। 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने के बाद लोकसभा और सभी राज्य विधानसभाओं के लिए पहली बार आम चुनाव 1951–1952 में एक साथ आयोजित किए गये थे। यह

प्रथा बाद के तीन लोकसभा चुनावों में 1967 तक जारी रही, जिसके बाद इसे बाधित कर दिया गया। यह चक्र पहली बार 1959 में टूटा जब केन्द्र ने तत्कालीन केरल सरकार को बरखास्त करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 356 (संवैधानिक तन्त्र की विफलता) को लागू किया। इसके बाद पार्टियों के बीच दल–बदल और प्रति दल–बदल के कारण, 1960 के बाद कई विधानसभाएं भंग हो गई जिसके कारण अन्ततः लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के लिए अलग–अलग चुनाव हुए। वर्तमान में अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, आन्ध्र प्रदेश और ओडिशा राज्यों में विधानसभा चुनाव लोकसभा चुनावों के साथ होते हैं। 1 सितम्बर 2023 को केन्द्र सरकार ने एक राष्ट्र, एक चुनाव (ONOE) योजना की व्यवहार्यता लगाने के लिए पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद की अध्यक्षता एक पैनल का गठन किया। समिति में गृहमन्त्री अमित शाह, कांग्रेस नेता अधीर रंजन–चौधरी, राज्यसभा में विपक्ष के पूर्व नेता गुलाम नबी आजाद, वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष एनके सिंह, लोकसभा के पूर्व महासचिव सुभाष सी कश्यप, वरिष्ठ अधिवक्ता हरीश साल्वे और पूर्व मुख्य सतर्कता आयुक्त संजय कोठारी शामिल हैं। एक राष्ट्र एक चुनाव (ONOE) से सार्वजनिक धन की बचत होगी प्रशासनिक व्यवस्था और सुरक्षा बलों पर तनाव कम होगा। विकास गतिविधियों पर प्रशासनिक ध्यान केन्द्रित होगा। चुनाव प्रचार के लिए ज्यादा समय मिलेगा।

क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के लिए भविष्य की चुनौतियाँ

भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के लिए भविष्य की मुख्य चुनौतियों में भाजपा जैसी राष्ट्रीय पार्टियों का बढता दबदबा, परिवारवाद/अलोकतान्त्रिक कार्यप्रणाली, और सीमित संसाधनों के साथ राष्ट्रीय विमर्श से तालमेल बिठाना शामिल है। क्षेत्रीय दलों को अब केवल स्थानीय मुद्दों के बजाय विकास और सुशासन के राष्ट्रीय एजेंडे पर भी खरा उतरना पड़ रहा है, जबकि नेतृत्व की अगली पीढ़ी तैयार करना भी एक बड़ी समस्या है।

- **राष्ट्रीय पार्टियों का उदय:** भाजपा के बढ़ते विस्तार ने कई राज्यों में क्षेत्रीय दलों (जैसे उत्तर– प्रदेश में सपा, बसपा और महाराष्ट्र में शिवसेना) के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा कर दिया है, जिससे गठबन्धन की राजनीति का दौर धीमा हुआ है।

- **नेतृत्व और पारिवारिक राजनीति:** अधिकांश क्षेत्रीय दल एक ही परिवार या नेता पर केन्द्रित हैं। ऐसे में यदि करिश्माई नेता नहीं रहता, तो पार्टी के टूटने या बिखरने का खतरा रहता है, क्योंकि संस्थागत ढांचा कमजोर हैं।

- **विकास बनाम क्षेत्रीयता:** अब मतदाता केवल जाति या क्षेत्र के नाम पर वोट नहीं दे रहे हैं, बल्कि विकास और राष्ट्रीय मुद्दों को प्राथमिकता दे रहे हैं। क्षेत्रीय दलों को अब स्थानीय पहचान के साथ–साथ विकास (Development) का एजेंडा भी प्रस्तुत करना पड़ रहा है।

- **संसाधनों में कमी:** राष्ट्रीय पार्टियों के पास भारी धन और संसाधन होते हैं, जिनका मुकाबला करना क्षेत्रीय दलों के लिए मुश्किल हो रहा है।

- **आन्तरिक लोकतन्त्र का अभाव:** कई क्षेत्रीय दलो में खुले और पारदर्शी कामकाज की कमी है, और कार्यकर्ताओं के लिए शीर्ष पद तक पहुँचने के अवसर बहुत सीमित हैं।

- **सन्तुलन बनाने की चुनौती:** उन्हें क्षेत्रीय अंकाक्षाओं को पूरा करने और राष्ट्रीय राजनीति में अपनी प्रांसगिकता बनाए रखने के बीच सन्तुलनश बनाना पड़ता है।

निष्कर्ष

क्षेत्रीय दल भारतीय लोकतन्त्र की विविधता और संघीय ढाँचे के अभिन्न अंग बन गये हैं। वे राष्ट्रीय दलो के एकाधिकार को चुनौती देते हैं और केन्द्र को क्षेत्रीय समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाते है। यद्यपि कभी–कभी ये दल संकीर्ण हितों को बढ़ावा देते या अस्थिरता पैदा करते हैं, लेकिन भारतीय संसदीय प्रणाली में एक अधिक समावेशी और भागीदारी – पूर्वं शासन सुनिश्चित करने में इनकी भूमिका अपरिहार्य और सकारात्मक मानी जाती है क्षेत्रीय दल भारतीय राजनीति की एक स्थायी और अपरिहार्य शक्ति बन गए हैं। जिन्होंने एक दलीय प्रभुत्व (one–Party dominance) से बहुदलीय संघवाद (Multi–Party Federalism) की ओर संक्रमण का नेतृत्व किया है हाँलाकि कभी–कभी वे संकीर्ण क्षेत्रीय स्वार्थों के कारण राष्ट्रीय एकीकरण और नीतिगत स्थिरता के लिए चुनौतियाँ भी पेश करते हैं, लेकिन कुल मिलाकर,

वे भारतीय संघीय ढाँचे को मजबूत करने और लोकतन्त्र को अधिक जमीनी स्तर तक ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

सन्दर्भ सूची

1. राज्य गठन में उत्तमावष्ट्र क्रान्ति दल की भूमिका: एक विवेचनात्मक अध्ययन (ndjournal- In)
2. उत्तराखण्ड क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व (Times of India & Aaj Tak Reports)
3. Evolution of Political system and Party Politics in Uttarakhand (EduRev)
4. गठबन्धन सरकार और सुशासन (coalition Grovernment & Good Grovernance – पी. सी. माथुर, होथियार सिंह
5. भारतीय राजनीति व्यवस्था और क्षेत्रीय दल (राजेश गुप्ता)
6. कोलिशन गवर्नमेंट एण्ड पॉलिटिक्स इन इण्डिया (coalition Grovernment and Politics in India)
7. सेंसेक्स क्षेत्रीय दलों का (Sensex kshetriya Dalon ka) अकु श्रीवास्तव
8. भारतीय शासन और राजनीति (Indian Government and Politics) बबिता चटर्जी
9. दृष्टि IAS. (www.dristiias.com)
10. आज तक (www.aajtak.in)
11. UKD आधिकारिक वेबसाइट
12. बिकिपीडिया – उत्तराखण्ड क्रान्ति दल
13. उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन का इतिहास (शंकर सिंह भाटिया)
14. उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक इतिहास (प्रोफेसर देवी दत्त शर्मा)
15. दैनिक /साप्ताहिक समाचार पत्र (पुराके अंक): 1979 से 2000 के बीच के स्थानीय अखबार